English

setuu अध्याय 16

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

भगवान् राम का मानवलोक में जन्म : चिरंजीवी हनुमान ने जगजाहिर की पूर्ण कथा

छोटे से अंतराल के पश्चात् चरण पूजा का पांचवा चरण शुरू हुआ | इस चरण के यजमान थे क्षणक नामक एक मातंग | इससे पहले कि वे हनुमान जी के चरणों में अर्पण करने के योग्य होते , उनकी आत्मा का शुद्ध होना आवश्यक था | हनुमान जी ने उसकी आत्मा को निम्नांकित ज्ञान के शब्दों से स्नान करवाया |

हनुमान जी बोले – "हे मातांगो , जैसा कि मैंने पहले बताया , असुरो की स्वयं की कोई देह नहीं होती | वे जिस भी देह- मन में घुस सके उसमे घुसने का प्रयास करते हैं और उस देह-मन का प्रयोग अपने बुरे कर्म करने के लिए करते हैं | वे शापित आत्माएं हैं जो मानवता के सतयुग से कलियुग तक के पतन के लिए जिम्मेदार हैं | सतयुग में वे असुरलोक में कैद थे जो कि पृथ्वी की सतह के ऊपर एक अदृश्य परत है | फिर वे असुरलोक से एक एक करके आजाद होना शुरू हुए और मानवलोक में आते गए | यह सिलिसिला त्रेतायुग में शुरू हुआ जिसके बाद उनकी मानवलोक में संख्या बढती ही गई |

"असुर अपने आप में असंगठित होते हैं , असंगठित अवस्था में वे एक दुसरे की ताकत को स्वयं ही काट देते हैं और उनका बुरा असर संसार पर नगण्य होता है | लेकिन उनका गुरु शुक्राचार्य जो भगवान् विष्णु का शत्रु है , असुरो की ताकत को संगठित करता है और संसार को बर्बाद करता है |

"दूसरी ओर भगवान् विष्णु असुरो की ताकत को काटकर संसार को बचाते हैं | अगर जरूरत पड़े तो वे स्वयं मानवलोक में अवतार लेकर असुरो की ताकत से लड़ते हैं |

"त्रेता युग में एक समय पर शुक्राचार्य के असुरो ने लंका नामक एक पूरे राज्य पर कब्ज़ा कर लिया था | अर्थात , लंका के हर वासी का देह तथा मन असुरों द्वारा कब्जा लिया गया था | असुरों का संयुक्त बल दिन भर दिन बढ़ता जा रहा था | उनकी ताकत उस स्तर तक पहुँच रही थी कि केवल भगवान् विष्णु स्वयं ही उसे ख़त्म कर सकते थे | उन्हें राम अवतार लेना था , और बहुत जल्द लेना था |

"हे मातांगो , जैसा कि मैंने पहले बताया , जीवन को अस्तित्व में आने के लिए दो चीजों की आवश्यकता होती है – (1) अस्तित्व का द्रव (2) काल के धागे | भगवान् इंद्र जो अस्तित्व के देव हैं , वे पिता में व्यक्त होकर अस्तित्व के द्रव की धारा प्रदान करते हैं | कालदेव जो समय के देवता हैं, वे माता में व्यक्त होकर काल के धागे प्रदान करते हैं |

"जब कोई सामान्य बच्चा पैदा होता है , उसकी कर्म और इच्छा की आवश्यकता सामान्य होती है इसलिए अस्तित्व के द्रव और काल के धागों की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए इंद्र और काल को पूर्णतः उपस्थित नहीं रहना पड़ता | वास्तव में उन्हें केवल अंश भर उपस्थित रहना पड़ता है |

“लेकिन भगवान् राम के जन्म के लिए उनका पूर्णतः उपस्थित रहना आवश्यक था ताकि एक ऐसा जीवन शुरू हो सके जो विश्व को बदलने वाला था | अगर इंद्र देव को किसी पुरुष की देह में पूर्णतः व्यक्त होना था , तो वह पुरुष इंद्र देव जितना शक्तिशाली होना आवश्यक था | अगर काल देव को किसी महिला की देह में पुर्णतः व्यक्त होना था तो उस महिला का कालदेव जितना योग्य होना आवश्यक था |

“एक दिन भगवान् विष्णु ने उनको विष्णुलोक में बुलाया और बोले – “हे इंद्र, हे काल , समय निकट आ गया है कि मैं मानवलोक में अवतरित हो जाऊं | हे इंद्र , उस पुरुष का नाम सुझाओ जो वहां पर मेरे पिता की भूमिका अदा कर सकें | हे काल , उस औरत का नाम सुझाओ जो मुझे अपने गर्भ में रखने के योग्य हो |”

“इंद्र देव ने उत्तर दिया – “प्रभु, वहां पर एक दशरथ नामक पुरुष है | वे कोसला राज्य के राजा हैं | उनका अपनी इन्द्रियों पर इतना नियंत्रण है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती | जिसके फलस्वरूप वे इतने शक्तिशाली बन गए हैं कि वे मेरा सिंहासन भी हिला सकते हैं | इतना शक्तिशाली होने के बावजूद उन्होंने कभी मेरे शासन को चुनौती नहीं दी है | उन्होंने अपनी शक्तियों का प्रयोग केवल अपने राज्य और मानवता की भलाई के लिए किया है | वे ऐसे पुरुष हैं जिनकी देह मेरे पूर्ण आविर्भाव का माध्यम बनने के योग्य है | इसलिए वे मानवलोक में आपके पिता की भूमिका निभाने के योग्य हैं |”

“काल देव ने उत्तर दिया – “प्रभु, वहां पर एक कौशल्या नामक महिला हैं | वे कोसला के राजा दशरथ की पत्नी हैं | वे जिस तरीके से संसार का अनुभव करती हैं वह सामान्य मानव के कल्पना के भी बाहर है | अगर वे इच्छा करें तो समय को भी रोक सकती हैं | उनका काल पर इतना नियंत्रण है कि वे कभी भी कालदेव के रूप में मेरा स्थान ले सकती हैं | लेकिन उन्होंने कभी भी मेरे आधिपत्य को चुनौती नहीं दी | उन्होंने अपनी शक्तियों का प्रयोग केवल अपने राज्य और मानवता की भलाई के लिए किया है | वे ऐसी महिला हैं जिनकी देह मेरे पूर्ण आविर्भाव का माध्यम बनने के योग्य है | अतः वे मानवलोक में आपकी माता की भूमिका निभाने के योग्य हैं |”

“हे मातंगो , अब मैं आपको समझाता हूँ कि किस योग्यता ने राजा दशरथ को इंद्र जितना शक्तिशाली बनाया और रानी कौशल्या को कालदेव जितना |

“बहुत कम लोग अपने भाग्य को समय से पहले जानने की कुशलता हासिल कर पाते हैं | राजा दशरथ और महारानी कौशल्या उन्ही चुनिन्दा लोगो में से थे | जब आप अपने भाग्य को समय से पहले जान लो तो आप उन सिद्धांतो को चुनौती दे सकते हो जिनसे यह विश्व चल रहा है | आप इंद्र देव को अपने चरणों में गिराकर आपकी आज्ञा मानने के लिए मजबूर कर सकते हो | आप कालदेव को अपना दास बना सकते हो |”

सभी मातंग भगवान् राम के जन्म की कथा सुनने में इतने तल्लीन थे कि उन्हें ये जानने में थोडा सा वक्त लगा कि हनुमान जी ने बोलना बंद कर दिया था और उनके शब्दों का स्थान एक रहस्मयी सन्नाटे ने ले लिया था | हनुमान जी ने मातंगो के चेहरों को एक एक करके घूरना शुरू कर दिया – पहले बाबा मातंग और माता मातंग , फिर ब्राह्मण , फिर उपस्थित जन , फिर होतर और उसके बाद उनकी आँखे यजमान क्षणक पर आकर रुक गई |

वे क्षणक से बोले – “हे यजमान , आपने सुबह से कुछ नहीं खाया है और आप पवित्र अग्नि के बहुत समीप बैठे हुए हैं | आप बेहोश होने वाले हैं |”

क्षणक पवित्र अग्नि से दूर खिसक गया | हनुमान जी बोले – “आप अपने भाग्य से नहीं भाग सकते क्षणक | मैं आपको आपका भाग्य समय से पहले बता रहा हूँ | आप बेहोश होने वाले हो और उसके बाद जल ग्रहण करने वाले हो | अगर आप भाग्य का उल्लंघन करने में सक्षम हो , तो करो | अगर आप ऐसा कर पाए तो इंद्र देव आपके ऋणी हो जायेंगे |”

क्षणक कुछ क्षण बाद बेहोश हो गए | बाबा और माता मातंग ने उसे तुरंत संभाला | उन्होंने तुरंत उसके चेहरे पर पानी छिड़का और उसे होश में ले आये | उसके बाद उन्होंने उसे पीने के लिए पानी का प्याला दिया | उसने तुरंत प्याला अपने होंठो से लगा लिया | वह पानी की घूंट भरने ही वाला था कि उसे हनुमान जी के शब्द स्मरण हो आये, ‘…अगर सक्षम हो तो उल्लंघन करो ‘|

उसने पानी का प्याला दूर फेंक दिया | उसके गले में जैसे आग लगी थी | वह चिल्लाया – “पानी … पानी … दो मुझे …”

उर्वा तुरंत पानी का एक और प्याला ले आया | जब क्षणक पानी की घूंट पीने ही वाला था , हनुमान जी के शब्दों ने उसे पुनः शक्ति दी और उसने प्याला गिरा दिया | वह चिल्लाना चाहता था लेकिन उसका गला साथ छोड़ गया था | वह रोना चाहता था लेकिन उसकी आँखे सूखी थी |

उसको एक और प्याला पानी लाकर दिया गया लेकिन उसने गजब इच्छाशक्ति का परिचय दिया और उस प्याले को भी फेंक दिया | वह रेंगकर उस स्थान पर गया जहाँ मिटटी गीली थी और अपने चेहरे को मिटटी में गडा दिया | सभी मातंग उसका दर्द महसूस कर रहे थे लेकिन हनुमान जी अपने आसन पर उदासीन बैठे हुए थे |

क्षणक ने तब तक अपनी प्यास का प्रतिरोध किया जब तक की उसकी प्यास मर नहीं गई | उसके इस इच्छाशक्ति के प्रदर्शन से बाबा मातंग गर्व से फूल गए और हनुमान जी मुस्कुरा दिए |

हनुमान जी बोले – "हे क्षणक , तुम्हारे भाग्य में था कि तुम पानी पीओगे किन्तु तुमने सफलतापूर्वक भाग्य का उल्लंघन कर दिया | तुमने ऐसा करके इंद्र देव को अपना ऋणी बना दिया है | मैं बताता हूँ कैसे |

"हम जो कुछ भी अपनी इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करते हैं वह असल में अस्तित्व का द्रव है – फिर चाहे वो खाना हो जो हम खाते हैं , प्राकृतिक दृश्य हो जिसे देखकर हम आनंदित होते हैं , मधुर ध्वनियाँ हों जिन्हें हम सुनते हैं , आदि आदि | यह सब भगवान् विष्णु के स्वामित्व में आता है | और इस सबको हर किसी को उचित रूप से वितरित करने की जिम्मेदारी इंद्र देव की है | आपके भाग्य में जो भी है, आपको वे प्रदान करते हैं | जो पानी पीना आपके भाग्य में लिखा था उसको अस्वीकार जब आपने किया तब इंद्र देव एक न्यायसंगत वितरक के रूप में अपना कर्त्तव्य निर्वाह करने में असफल हो गए | अब वे आपके ऋणी हो गए हैं इसलिए उन्हें इसके लिए आपको हर्जाने के रूप में कुछ देना होगा |

"पानी अस्वीकार करना एक सामान्य सा कार्य है | अगर आप ऐसे ही अपने भाग्य का उल्लंघन करते रहो और जो भी आपके भाग्य में है उसे अस्वीकार करते रहो, तो आप इंद्र देव के उनके कार्य करने की क्षमता पर सवालिया निशान लगा दोगे | फिर जो भी आपने अस्वीकार किया है उसका हर्जाना देने के लिए वे आपके समक्ष प्रकट होंगे और आपसे प्रार्थना करेंगे कि आप उनसे कुछ मांगो | अगर आप उनका हर्जाना भी अस्वीकार कर दो तो उनका पद खतरे में पड़ जायेगा | भगवान् विष्णु इसका कड़ा संज्ञान लेंगे और इंद्र के कार्य के लिए किसी बेहतर व्यक्ति को ढूंढेंगे | अगर आप इंद्र बनने में सक्षम हो तो आप भी इंद्र का पद ले सकते हो |

[**सेतु टिपण्णी :** यही कारण है कि भोजन न लेने का व्रत रखने से इच्छापूर्ती में सहायता मिलती है | जब आप अपने भाग्य में लिखा भोजन नहीं करते हैं तो इंद्र देव आपके ऋणी हो जाते हैं और आपको हर्जाने के रूप में वही देते हैं जो आप व्रत तोड़ते समय इच्छा कर रहे होते हैं]

"आप निश्चय ही इंद्र का पद लेने के लिए सक्षम नहीं हो लेकिन राजा दशरथ अवश्य ही थे | लेकिन उन्होंने इंद्र के आधिपत्य को कभी चुनौती नहीं दी | हाँ वे अपने भाग्य का उल्लंघन प्राय: करते थे | लेकिन जब इंद्र देव उनसे हर्जाना स्वीकार करने की प्रार्थना करते थे , वे हर्जाना स्वीकार कर लेते थे |

"कोसल राज्य में यह आम बात थी | राजा दशरथ अपने भाग्य का उल्लंघन करते और इंद्र देव प्रकट होकर कहते – "हे रघुवंशी राजन , आपने अपने भाग्य में जो लिखा था उसे स्वीकार न करके मुझे अपना ऋणी बना लिया है | अतः मुझे आपको हर्जाना देना पड़ेगा | मैं आपसे भीख मांगता हूँ , कृपा हर्जाने के रूप में कुछ मांगें |"

"और तब राजा दशरथ उत्तर देते – "हे बलशाली इंद्र , अगर आप मुझे हर्जाना देना चाहते हैं तो ऐसा करे कि मेरे राज्य के लोग समृद्ध रहें | मेरे राज्य में किसी चीज की कमी न हो |"

"इसी कारण कोसल राज्य खुशहाल था |

“हे मातांगो , मैं आपको एक उदाहरण दूंगा जिससे आप ये जान जाओगे कि राजा दशरथ कैसे महान पुरुष थे |

“जब भगवान् राम को 14 वर्ष का वनवास मिला था तब राजा दशरथ ने अपने भाग्य का उल्लंघन करना शुरू कर दिया | उनके भाग्य में अच्छा खाना लिखा था , उन्होंने खाना छोड़ दिया ; उनके भाग्य में लिखा था कि भगवन राम की वापसी तक वे राज्य करेंगे , लेकिन उन्होंने वह अस्वीकार कर दिया ; उनके भाग्य में लिखा था कि वे पुत्र राम की जुदाई में अपने मन की अद्भुत शक्ति का परिचय देंगे , लेकिन उन्होंने ऐसा स्वीकार नहीं किया और वे टूट गए ; और अंततः उनके भाग्य में लिखा था कि वे अभी और कई साल जियेंगे किन्तु उन्होंने अपना जीवन त्याग दिया |

“जब उन्होंने अपना देह त्याग कर दिया , इंद्र देव उनकी आत्मा से बोले – “हे रघुवंशी , अपने भाग्य में जो लिखा था उसे अस्वीकार करके आपने मुझे बहुत ऋणी बना दिया है | मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ , कृपा मुझसे हर्जाना स्वीकार करें |”

“इस बार राजा दशरथ ने माँगा – “हे महाबली इंद्र, मेरा पुत्र 14 साल के लिए वन गया है | वन में जीवन बहुत कठिन है | कई बार पानी की झलक तक पाने के लिए मीलो चलना पड़ता है | कई बार खाने के लिए सूखे पत्ते भी नहीं मिलते | हे इंद्र देव , आप इस संसार में कमी तथा भरपूरता के लिए जिम्मेदार हैं | मैं आपसे मांगता हूँ , मेरे पुत्र तथा पुत्रवधु जो वन में गए हैं उन्हें किसी चीज की कमी न झेलनी पड़े |”

“परिणामस्वरूप भगवान् राम को जंगल में रोजमर्रा की वस्तुए पाने के लिए अपनी दैवीय शक्ति का कभी प्रयोग नहीं करना पड़ा | जंगल में एक सामान्य मनुष्य की तरह रहते हुए उन्हें कभी किसी चीज की कमी नहीं झेलनी पड़ी |

“हे मातंगो , यह थी राजा दशरथ की महानता | इसलिए भगवान् विष्णु ने त्रेता युग में मानवलोक में आने के लिए उनको अपने पिता के रूप में चुना |

“महारानी कौशल्या भी कम नहीं थी | अगर महाराज दशरथ की क्षमता भगवान् इंद्र के समान थी , रानी कौशल्या की क्षमता कालदेव की क्षमता की बराबरी करती थी |” हनुमान जी ने बताया |

इस समय एक फल वेदी पर रखी टोकरी में से उड़कर हनुमान जी के हाथो में आ पड़ा | युवा मातंग हंस पड़े |

“हे मातंगो , मेरे हाथ में एक सेब है | मैं चाहता हूँ की आपमें से कोई इस फल को मेरे हाथ से गायब करके दिखाए | शर्त यह है कि आपको इस सेब को कुछ नहीं करना है |” हनुमान जी ने मातंगो को चुनौती दी |

“उर्वा नामक एक युवा मातंग चुनौती आजमाने के लिए खड़ा हुआ | वह हनुमान जी को प्रणाम करते हुए बोला – “प्रभु , अगर मैं अपनी आँखे बंद कर लूँ और इस सेब के बारे में सोचना बंद कर दूं , तो यह सेब मेरे लिए अस्तित्व में नहीं रहेगा |”

“ठीक|” हनुमान जी बोले – “लेकिन तुम्हे इसे बिना आँख बंद किये गायब करना है | तुम्हे इस सेब की ओर देखना है और गायब करना है |”

उर्वा ने कुछ पल सोचा और उत्तर दिया – “हे प्रभु, मेरे मस्तिष्क में एक ज्ञान है | वह ज्ञान मुझे बताता है कि यह चीज सेब है | अगर मैं उस ज्ञान को अपने मस्तिष्क से निकाल फेंकू , तो मैं इसे सेब की तरह नहीं देखूंगा , मैं इसे …”

“… एक अनजानी चीज की तरह देखूंगा |” हनुमान जी ने वाक्य पूरा किया और बोले – “ठीक | तुमने सेब को गायब कर दिया लेकिन उसके स्थान पर एक चीज रह गई | क्योंकि तुम इसे एक अनजानी चीज की तरह देखोगे | क्या तुम इसे पूर्णतः गायब कर सकते हो?”

“हाँ प्रभु “ उर्वा ने उत्तर दिया – “मेरे मस्तिष्क में एक ज्ञान है जो मुझे किसी वस्तु और अवस्तु , ठोस और गैस, रंगीन और बेरंग , आदि आदि फर्क करना सिखाता है | अगर मैं अपने मस्तिष्क से वह ज्ञान निकाल दूँ , तो मैं हवा और इस सेब नामक ठोस वस्तु में फर्क भूल जाऊँगा | अर्थात , मेरे लिए यह वस्तु गायब हो जायेगी |”

“बहुत अच्छा !” हनुमान जी ने उर्वा की प्रशंसा की और बोले – “हे मातंगो, देखो यहाँ क्या हो रहा है | उर्वा का भाग्य है कि वह इस समय मेरे हाथ में सेब देखे | इंद्र देव ने यह सेब उर्वा की आँखों के आगे लाकर अपना कार्य पूरा कर दिया है | उर्वा की आँखें खुली हैं लेकिन वह इस सेब को नहीं देख पा रहा है | वह अपने भाग्य का उल्लंघन कर रहा है | लेकिन इंद्र देव को इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि उन्होंने तो अपना काम पूरा कर दिया है | तो इसके लिए जिम्मेदार कौन है?”

उर्मी नामक एक मातंग लड़की खड़ी हुई और उत्सुकतापूर्वक बोली – “हे प्रभु , कोई भी चीज दो चीजो से अस्तित्व में आती है – (1) अस्तित्व का द्रव जो उस वस्तु को बनाता है (2) समय के धागे जिन पर वह वस्तु छपती है | यहाँ पर इंद्रा देव ने यह वस्तु उर्वा की आँखों के सामने बनाकर अपना कार्य कर दिया है लेकिन इस वस्तु की छाप उर्वा तक नहीं पहुँच रही है | अर्थात यहाँ पर काल के धागे काम नहीं कर रहे हैं | अतः भाग्य के इस उल्लंघन के लिए कालदेव जिम्मेदार हैं |”

[**सेतु टिपण्णी :** यहाँ पर फिल्म थिएटर का उदाहरण काफी सहायक हो सकता है | इंद्र प्रोजेक्टर हैं जो वस्तुओ को बनाने के लिए अस्तित्व के द्रव को प्रोजेक्ट करते हैं | मूवी स्क्रीन काल के वे धागे हैं जिनका प्रबंधन कालदेव करते हैं | अगर स्क्रीन न हो तो अकेले प्रोजेक्टर से मूवी नहीं दिखाई जा सकती | यह संसार एक मूवी की तरह है जो देखी और सुनी ही नहीं बल्कि इसके साथ छूना , सूंघना तथा अन्य तरह के आदान-प्रदान किये जा सकते हैं |]

हनुमान जी बोले – “हे मातंगो , उर्मी ने बहुत सही वर्णन किया है | बचपन से ही मनुष्य एक ज्ञान इकठ्ठा करता है जिसे भ्रामक ज्ञान कहते हैं | इस ज्ञान की सहायता से आप चीजो को पहचानते हैं और कहते हैं – ‘यह सेब है , यह संतरा है , यह हवा है , यह खाली स्थान है , यह वस्तु है , यह काला है , यह श्वेत है ‘ आदि आदि | यह ज्ञान आपको इश्वर की ओर नहीं ले जाता | यह ज्ञान आपको इस सांसारिक भ्रम में उलझाए रखता है | इसलिए इसे भ्रामक ज्ञान कहते हैं | यह जितना कम हो उतना ठीक है |

“अगर आप इस भ्रामक ज्ञान को अपने मस्तिष्क से निकाल दो तो आपके आस पास का यह संसार रुपी भ्रम गायब हो जाएगा | रानी कौशल्या ऐसा करने में कुशल थी |

“उदाहरण के तौर पर, एक दोपहर रानी कौशल्या के भाग्य में था कि वे गुलाबो का उद्यान देखें | भगवान् इंद्र ने अपना काम किया और रानी उस उद्यान में पहुँच गई जहां बहुत प्रकार के गुलाब थे | लेकिन रानी को एक भी गुलाब नहीं दिखा | उन्होंने अपने मस्तिष्क से वह भ्रामक ज्ञान निकाल फेंका था जो उन्हें गुलाब और अन्य वस्तुओं में फर्क बताता |

“वे अपने भ्रामक ज्ञान को कभी भी और कही भी निकाल सकती थी जिससे उनके आस पास की चीजे गायब हो जाती | फिर कालदेव उनके सामने प्रकट होते और प्रार्थना करते – “हे महारानी , इस समय आपका भाग्य है कि आप अपने आस पास गुलाब देखें | भगवान् इंद्र ने अस्तित्व के द्रव से आपके सामने सफलतापूर्वक उद्यान तो बना दिया है लेकिन मैं अपने काल के धागों (की स्क्रीन) पर उसकी छपाई नहीं कर पा रहा हूँ | यह इसलिए हो रहा है क्योंकि आपने अपने (भ्रामक) ज्ञान को निकाल फेंका है | मैं अपना कर्तव्य निभाने में असफल हो गया हूँ | कृपा इसके बदले मेरा हर्जाना स्वीकार करें |”

“हे मातांगो , अगर रानी कौशल्या चाहती तो वे कालदेव के आधिपत्य को चुनौती दे सकती थी | भगवान् शिव इस बात का संज्ञान लेते कि उनके प्रबंधक कालदेव सही से काम नहीं कर पा रहे हैं (कालदेव जिन काल के धागों का प्रबंधन करते हैं , उनके स्वामी शिव हैं) | और फिर वे कालदेव के पद पर किसी और को नियुक्त करते |

“लेकिन रानी कौशल्या ने कभी कालदेव का सिंहासन डगमगाने की कोशिश नहीं की | वे हमेशा कालदेव का दिया हर्जाना स्वीकार कर लेती | वे कहती – “हे कालदेव, जब कोई जाने अनजाने में कोई पाप करता है तो आप उसे अपने काल के धागों पर लिख लेते हो | और फिर पाप करने वाले को भविष्य में दंड मिलता है | मेरे राज्य में कोई जान बुझकर पाप नहीं करता | मैं चाहती हूँ कि मेरे राज्य में जिन लोगो ने अनजाने में पाप किये हैं आप उनका बही खाता मिटा दीजिये | बस मुझे हर्जाने में यही चाहिए |”

“रानी कौशल्या अपनी कुशलता का प्रयोग हमेशा अपने राज्य और मानवता की भलाई के लिए करती थी | वे इतनी शक्तिशाली थी कि कालदेव उनके सामने घुटने टेककर भीख मांगते थे | लेकिन उन्होंने अपनी शक्ति का कभी दुरपयोग नहीं किया | यही कारण है कि भगवान् विष्णु ने मानवलोक में उन्हें अपनी माँ के रूप में चुना |

“हे मातंग मानवो , भगवान् राम के जन्म के लिए यह आवश्यक था कि इंद्र देव पिता (दशरथ) में अपना पूर्ण आविर्भाव करते और काल देव माता (कौशल्या) में अपना पूर्ण आविर्भाव करते | जब शुक्राचार्य को पता चला कि भगवान विष्णु मानव लोक में आने की सोच रहे हैं तो उसने राम जी के जन्म को रोकने के लिए अपने प्रयास आरम्भ कर दिए | ऐसा करने का एक ही तरीका था : काल अथवा इंद्र देव का ध्यान भटकाए रखना ताकि वे क्रमशः माता और पिता में अपना पूर्ण आविर्भाव न कर सकें |

“शुक्राचार्य के असुरो का लंका के लोगो पर पूर्ण नियंत्रण था लेकिन लंका उस स्थान से बहुत दूर थी जहाँ राम जी जन्म लेने की योजना बना रहे थे | कोसल राज्य में कोई एक भी मनुष्य ऐसा नहीं था जो असुरों के आघात योग्य हो | लेकिन शंकराचार्य को पडोसी राज्य अंग में एक मनुष्य मिल गया जो न केवल असुरों के आघात योग्य था बल्कि इंद्र जितना शक्तिशाली भी था | वह मनुष्य थे विभंडक नाम के एक प्रसिद्द ऋषि |

“विभंडक एक भले आदमी थे लेकिन उनकी एक कमजोरी थी | वे किसी को कष्ट में नहीं देख सकते थे | शुक्राचार्य ने उनकी इसी कमजोरी का फायदा उठाकर उनके मन में असुर प्रवेश करा दिया |

“शुक्रचार्य ने एक बूढ़े मनुष्य के रूप में विभंडक के आश्रम ने प्रवेश किया | वह बोला – “हे भले ऋषि , मुझे खाने को कुछ दो | मेरे कोई बच्चे नहीं हैं और मैं स्वयं भोजन अर्जन में अक्षम हूँ | मेरी पत्नी ने भी दो दिन से कुछ नहीं खाया है |”

“विभंडक को क्रोध आ गया , उस बूढ़े आदमी पर नहीं बल्कि इंद्र पर | उन्होंने अपने आश्रम में जो कुछ था सब उस बूढ़े आदमी को दे दिया |

“विभंडक अपने भाग्य का उल्लंघन करके इंद्र देव से घुटने टिकवाने में कुशल थे | जब बुढा आदमी चला गया , विभंडक ने अपने भाग्य का उल्लंघन शुरू कर दिया और इंद्र को अपने सामने प्रकट होने पर मजबूर कर दिया |

“विभंडक ने इंद्र देव की हर्जाने की पेशकश ठुकरा दी और बोले – “हे इंद्र देव , आप बहुत घमंडी हो गए हो | लोग भूख से मर रहे हैं और आप भगवान् विष्णु द्वारा प्रदान की गई समृद्धि का स्वयं आनंद ले रहे हैं | मैं कोई हर्जाना स्वीकार नहीं करूँगा | मैं तब तक अपने भाग्य का उल्लंघन करता रहूँगा जब तक कि आप इंद्र के पद से हटा नहीं दिए जाते |”

“इंद्र देव विनम्रता से बोले – “हे ज्ञानी, मैं सबको उनके कर्मों के अनुसार अस्तित्व के द्रव का वितरण करता हूँ | अगर कोई भूखा है तो निश्चय ही उसके कर्म मुझे उसको भोजन प्रदान नहीं करने दे रहे होंगे |”

““तुम अपनी कर्म की अल्पबुद्धि बातों से किसी की भुखमरी को न्यायसंगत ठहरा रहे हो ? मेरे आश्रम से निकल जाओ , हे घमंडी | तुम इंद्र पद के काबिल नहीं हो | तुम भगवान् विष्णु के अस्तित्व द्रव का प्रबंधन करने की लायक नहीं हो|”

“विभंडक के मन को असुरों ने काट किया था | अब उनसे तर्क करने का कोई फायदा नहीं था | इंद्र देव वहां से अंतर्ध्यान हो गए |

विभंडक ने खूब जोर शोर से अपने भाग्य का उल्लंघन करना शुरू कर दिया | इंद्र देव ने कई बार उनको हर्जाने की पेशकश की लेकिन उन्होंने मना कर दिया | इंद्र देव इस सबको कुछ दिन और बर्दाश्त कर सकते थे लेकिन ऐसे समय में जब भगवान् विष्णु मानवलोक में अवतरित होने की तैयारी कर रहे हो , और इंद्र देव के पूर्ण आविर्भाव का कभी भी बुलावा आ सकता हो , तब विभंडक द्वारा की जा रही इन विद्रोह भरी गतिविधियों को सहन करने का कोई कारण नहीं था |

“हे मातंगो , जब कोई इंद्र देव के आधिपत्य को चुनौती देता है तो वे विद्रोही को शांत करने के लिए अप्सराएँ भेजते हैं | अप्सराएँ बहुलता की मूर्त होती हैं | जब वे किसी के सामने प्रकट होती हैं तो वह विद्रोह छोड़ देता है | वह उन द्वारा की गई किसी भी पेशकश को स्वीकार कर सकता है | अगर वे मृत्यु की भी पेशकश करे तो भी स्वीकार्य हो जाती है |

“जब विभंडक की विद्रोही ऊर्जा अप्सरा उर्वशी ने शांत कर दी तब इंद्र देव उनके सामने प्रकट हुए और बोले – “हे ज्ञानी , आपने अपना भाग्य उल्लंघन करने के प्रयास में जो कुछ भी अस्वीकार किया है , उसके बदले में कृपा हर्जाना स्वीकार करें |”

“विभंडक ने इंद्र से अपनी हार स्वीकार कर ली थी किन्तु जिस असुर ने उनको संक्रमित किया था वह अब भी उनके मन में विद्यमान था | उस असुर के प्रभाव में वे बोले – “हे इंद्र , मैं एक बच्चे का पिता बनना चाहता हूँ | आप मेरी देह में व्यक्त हो जाओ और काल देव को उर्वशी की देह में व्यक्त होने दो , और मुझे संतान सुख दो | मैं हर्जाने में केवल यही चाहता हूँ |”

“हे मातंगो , जानते हो विभंडक क्यों हार गए? भ्रामक ज्ञान के कारण | ‘यह भद्दा है , यह सुन्दर है , यह बहुल है , यह अपर्याप्त’ ये सब पहचाने हमें भ्रम की ओर ले जाती हैं | अगर भ्रामक ज्ञान नहीं होता तो उन्हें अप्सरा और किसी सामान्य औरत में कोई फर्क मालुम नहीं होता |

“यह भ्रामक ज्ञान बचपन से ही हमारे मन में जमा होना शुरू हो जाता है | ऋषि विभंडक ने निर्णय लिया कि वे एक बच्चे के पिता बनेंगे और उस बच्चे को भ्रामक ज्ञान से दूर रखकर पालेंगे ताकि वह बड़ा होकर इंद्रदेव को हरा सके |

“ऋषि विभंडक ने अपने बच्चे का नाम रखा रिश्यश्रिंग | उन्होंने उसको बाहरी समाज से बिलकुल अलग कर दिया और उसे निम्नतम भ्रामक ज्ञान और अधिकतम ब्रह्मज्ञान देना शुरू कर दिया |

“जब बालक रिश्यश्रिंग किसी फल , फूल , मनुष्य , पशु आदि किसी भी चीज की तरफ इशारा करता और पूछता ‘वह क्या है?’, उसके पिता विभंडक उसे उत्तर देते , ‘यह अस्तित्व के द्रव का एक प्रकार मात्र है’| इस तरह रिश्यश्रिंग के लिए सब कुछ अस्तित्व के द्रव का एक प्रकार मात्र बन गया | उसे न रंगों का ज्ञान था , न गंधों का , न आकारों का , किसी का भी ज्ञान नहीं था |

“एक बार बालक रिश्यश्रिंग ने एक नीले फूल और नीले आसमान में समानता देखी और बोला – “इन दोनों में कुछ तो समान है |”

“उसके पिता ने उसको यह नहीं बताया कि वह समानता रंग नामक एक चीज की वजह से है | उसकी बजाए उसने उत्तर दिया – “हे रिश्यश्रिंग , समानता भी अस्तित्व के द्रव का एक प्रकार मात्र है |”

“अब इंद्र देव को भय लगना शुरू हो गया | वे जानते थे कि अगर बड़ा होकर रिश्यश्रिंग उनके आधिपत्य को चुनौती देने लगा तो अप्सराएँ भी नाकाम हो जाएँगी | वे भगवान् विष्णु के पास गए और बोले – “प्रभु, अगर आप मानव लोक में अवतरण करना चाहते हैं तो कृपा अभी करें | क्योंकि अगर यह बालक बड़ा हो गया तो यह मेरे आधिपत्य को चुनौती देने लगेगा , मैं विचलित हो जाऊँगा और आपके जन्म के लिए आवश्यक पूर्ण आविर्भाव नहीं दे पाऊंगा | अगर आप इस समय जन्म लेते हो तो जब तक यह बालक बड़ा होगा तब तक आप भी राम अवतार में बड़े हो जायेंगे और इस रिश्यश्रिंग से निपट पायेंगे |”

“कालदेव को भी इस बच्चे से डर लग रहा था क्योंकि भ्रामक ज्ञान के अभाव में वह कालदेव को दास बनाने के योग्य भी हो जाता | उन्होंने भी भगवान् विष्णु से तुरंत जन्म लेने की प्रार्थना की |

“भगवान् विष्णु जानते थे कि उस समय जन्म लेना शुक्राचार्य के जाल में कदम रखना था | भगवान् विष्णु इसलिए राम अवतार ले रहे थे कि वे लंका राज्य में केन्द्रित असुरों के संयुक्त बल को तोड़ते | किन्तु शुक्राचार्य उन्हें अंग देश के एक ऋषि विभंडक से लडवाना चाह रहा था | भगवान् राम के जीवन काल में एक ऋषि का बुराई की तरफ होना ही एक तरह से अच्छाई की हार होती |

“भगवान् विष्णु ने इंद्र देव को उत्तर दिया – “देवराज , ऋषि विभंडक और उनके पुत्र रिश्यश्रिंग को असुर-मुक्त करने के लिए मेरी आवश्यकता नहीं है | यह कार्य तो विष्णुलोक की कोई भी भली आत्मा कर सकती है | मेरी जरुरत बुराई के उस सयुंक्त बल को तोड़ने के लिए है जो लंका में केन्द्रित है |

“हे मातंगो , विष्णुलोक में ऐसी बहुत सी भली आत्माएं हैं जिन्होंने मोक्ष की बजाये श्री विष्णु की सेवा को चुना | वहां शांत नामक एक बहुत भली आत्मा थी | भगवान् विष्णु ने उस आत्मा को यह विशेष कार्य सौंपा कि वह विभंडक और उनके पुत्र को ठीक करे |

“शांत राजा दशरथ और रानी कौशल्या की पुत्री के रूप में मानव लोक में आई | एक तरफ विभंडक का पुत्र एक अलग-थलग आश्रम में बड़ा हो रहा था , तो दूसरी तरफ राजा दशरथ की पुत्री अयोध्या के महल में बड़ी हो रही थी | विभंडक का पुत्र जहाँ संसार की एक समस्या बनने वाला था, शांत उस समस्या का समाधान बनने वाली थी |

“जब विभंडक का पुत्र रिश्यश्रिंग बड़ा हो गया तो उसने इंद्र देव के आधिपत्य को चुनौती देने के लिए अपने भाग्य का उल्लंघन करना शुरू कर दिया | इंद्र उसके समक्ष कई बार प्रकट हुए और हर्जाने की पेशकश की लेकिन उसने अस्वीकार कर दिया | इंद्र ने अपनी अप्सराओं को भी भेजा लेकिन रिश्यश्रिंग के लिए अप्सराये भी किसी अन्य की तरह अस्तित्व के द्रव का एक प्रकार मात्र थी | इसलिए अप्सराये भी असफल हो गई |

“देव इंद्र गहरे भय में थे | उनका आधिपत्य संकट में था और विद्रोही को शांत करने के उनके सामान्य तरीके काम नहीं कर रहे थे | वे अंग के राजा रोम्पद के पास गए और बोले – “हे राजन, एक युवा ऋषि आपके राज्य में रहता है जिसका नाम है रिश्यश्रिंग | वह मेरे कर्तव्य पालन में विघ्न डाल रहा है | आपको उसे अपने राज्य से निकाल देना चाहिए अन्यथा आपका पूरा राज्य उसके बुरे कृत्यों के कारण तडपेगा |सभी नागरिको को खतरे में डालने की बजाये एक नागरिक को बाहर कर देना बेहतर है | मैं आपको चेता रहा हूँ | अगर वह मुझे अपना कार्य नहीं करने देगा तो आपके पूरे राज्य में हर चीज की कमी हो जायेगी |”

“राजा रोम्पद धर्म संकट में थे | उन्होंने उत्तर दिया – “हे इंद्र देव , अगर मैं एक ऋषि को अपने राज्य से बाहर निकालूँगा तो वह अक्षम्य पाप होगा | अगर मैं ऐसा पाप करूँगा तो मेरा पूरा राज्य संकट में आ जाएगा | मैं उसे बाहर नहीं निकाल सकता , कृपा आप उसे शांत करने का कोई और तरीका निकालिए |”

“इंद्र के पास उसे शांत करने का कोई तरीका नहीं बचा था | रिश्यसृंग ने इंद्र को इतना कमजोर बना दिया जितने वे पहले कभी नहीं हुए थे | अंग देश के अन्य नागरिक भी कष्ट में आ गए | उन्हें भोजन और पानी तक की कमी हो गई | उन्होंने इंद्र देव से प्रार्थना की लेकिन इंद्र तो स्वयं संकट में थे |

“मेरे प्रभु श्री विष्णु ने ऋषि विश्वमित्र को समाधान सुझाया | ऋषि विश्वामित्र राजा रोम्पद के पास गए और बोले – “हे राजन, आपकी पत्नी की बहन कौशल्या , जो कोसल राज्य की रानी हैं , उनकी एक पुत्री है | वह ही आपकी हर समस्या का निदान है | उसे गोद ले लो और अपने राज्य में ले आओ | जब वह यहाँ आएगी तो उसे अपने जीवन के उद्देश्य का आभास होगा | वह जो भी आवश्यक होगा , करेगी |”

"राजा रोम्पद ने ऋषि विश्वामित्र की सलाह मानी और शांत को गोद ले लिया | जब शांत को युवा ऋषि रिश्यश्रिंग के बारे में पता चला तो उसे अपने जन्म का उद्धेश्य याद आया | वह ऋषि के आश्रम में पहुंची |

"हे मातंग मनुष्यों ! ऋषि विभंडक और उनके पुत्र रिश्यश्रिंग एक असुर से संक्रमित थे तो शांत के साथ हज़ारों सुरों का बल था | जब वह आश्रम पहुंची तो असुर वहां से भाग निकला |

"जब ऋषि विभंडक और रिश्यश्रिंग असुरों से मुक्त हो गए , उन्हें अपनी गलती का आभास हुआ | उन्होंने इंद्र देव से क्षमा मांगी | जब रिश्यश्रिंग से पूछा गया कि वे हर्जाने के रूप में क्या चाहते हैं तो उन्होंने कहा – "हे इंद्र देव , अंग देश में सम्पन्नता पुनः स्थापित हो | कोई भी किसी प्रकार की कमी से कष्ट न भुगते |"

"शांता ने रिश्यश्रिंग को न केवल असुर से मुक्त कराया , अपितु उससे विवाह करने का भी निर्णय लिया ताकि शुक्राचार्य कभी भी उनके समीप भी न आ सकें | ऐसा करके शांत ने अपने जीवन का उद्देश्य पूर्ण किया |

"अब इंद्र देव और काल देव को कोई समस्या नहीं थी | अब वे भगवान् राम के जन्म के लिए पूर्णतः उपलब्ध थे |" हनुमान जी ने कथा को विराम दिया |

अब जबकि यजमान क्षणक की आत्मा हनुमान जी द्वारा दिए गए इस ज्ञान से पवित्र हो गई , बाबा मातंग ने उसके लिए अर्पण की प्रक्रिया प्रारंभ की |

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
534924	Rs. 108	Successful	14/11/2016 - 07:13

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home **मातंग इतिहास** Terms of Use Privacy Policy Reach Us **तकनीकी सहायता** Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print